Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

'चीफ की दावत' कहानी की आधुनिक युग के सन्दर्भ में समीक्षा

Pooja*

M.A. Hindi (UGC NET) Hisar

शोध सारः- *'चीफ की दावत' भीष्म साहनी द्वारा रचित प्रमुख कहानी है। इस कहानी में उन्होने मध्यमवर्गीय समाज के खोखलेपन तथा दिखावटीपन को दर्शाया है। उनके द्वारा रचित कहानी आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। जितनी उस समय थी। भीष्म साहनी ने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित युवा पीढ़ी पर करारा व्यंग्य किया है। आज के शिक्षित युवा वर्ग अपने माता पिता को बोझ समझते हैं। व्यक्ति अपनी सुख सुविधा के लिए अपने माता पिता को छोड़ देते हैं। वे यह तक भूल जाते हैं कि आज जिस समाज मे तुम रह रहे हो उनकी बदौलत है। अपने बच्चो को काबिल बनाने के लिए माता पिता अपना सर्वस्व समर्पित कर देते हैं। उनका पूरा जीवन अपने बच्चों की खुशी के लिए बलिदान में व्यतीत हो जाता है। 'चीफ की दावत' एक ऐसी ही कहानी है, जिसमें स्वार्थी बेटे शामनाथ को अपनी विधवा बूढ़ी माँ का बलिदान फर्ज ही नजर आता है।*

मुख्य शब्दः- *संवेदना, खोखलापन, महत्वाकांक्षा, दफ्तर, पदोन्नति, बलिदान, कुड़ा कर्कट, प्रदर्शन, साक्षात्, समर्पण, तरक्की*

----------X----------

हिन्दी गद्य की सभी विधाओं में कहानी सबसे अधिक समृद्ध तथा लोकप्रिय विद्या है। ये छोटे मुंह बड़ी बात करती है। प्रसिद्ध कथाकार अज्ञेय के अनुसार, 'कहानी एक सूक्ष्मदर्शी यन्त्र है जिसके नीचे मानवीय अस्तित्व के दृश्य खुलते हैं'

मानवीय संवेदनाओं के विकास का वर्णन कथा साहित्य का उपजीव्य है। हिन्दी कहानी की विकास यात्रा मुख्यतः 1900 ई.वी. के आस पास शुरू हुई तब से लेकर आजतक अनेक कहानीकार हुए हैं। जिन्होने अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक जीवन की समस्याओं, सामाजिक जीवन की यर्थाथता को उजागर किया है।

प्रगतिशील परम्परा में जिन कथाकारो का नाम बड़े आदर से लिया जाता है उनमें भीष्म साहनी भी एक प्रमुख कथाकार हैं। जिन्होने अनेक कहानियां लिखी हैं। यथा- भाग्य रेखा, पहला पाठ, भटकती राख, पटरियां, 'चीफ की दावत' आदि। इन्होंने निम्न व मध्यमवर्गीय समाज को अपनी कथा का विषय बनाया है। उन्होने नवीन मूल्य, नवीन मान्यताओं तथा स्वार्थपन को रेखांकित किया है। मध्यवर्गीय वर्ग के खोखलेपन, दिखावटीपन तथा स्वार्थपरता को उन्होने 'चीफ की दावत' कहानी में दर्शाया है। इसमें मध्यम वर्गीय व्यक्ति की निजी महत्वाकांक्षाओं को दर्शाया गया है। इस कहानी का केन्द्र बिन्दू मिस्टर शामनाथ व उसकी बूढ़ी माँ है। कथा में शामनाथ के माध्यम से शिक्षित पीढ़ी के अशिक्षित आचरण को जीवंतता के साथ पेश किया गया है।

शामनाथ दफ्तर में नौकरी करता है। वह धीरे धीरे उच्च पद पाने की महत्वाकांक्षा रखने लगता है। अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए वह विदेश चीफ की खुशामदी करता है। शामनाथ चीफ को अपने घर दावत पर आमन्त्रित करता है। शामनाथ के घर उसकी पत्नी तथा बूढ़ी मां है। परन्तु वह अपनी माँ की अनावश्यक समान की तरह उपेक्षा करता है। वह अपनी निरक्षर व बूढ़ी माँ को कहीं छुपाना चाहता है। वह सोचता है कि चीफ उसकी माँ के साक्षात से नाराज न हो जावें। इसलिए वह अपनी माँ को चीफ के आने से पहले ही अपनी कोठरी में भेजने को कहता है। वह अपनी पत्नी से कहता है,

"नहीं, मैं नहीं चाहता कि इस बुढ़िया का आना जाना फिर से शुरू हो। पहले ही बड़ी मुश्किल से बन्द किया था। माँ से कहो कि जल्दी से खाना खाकर शाम को ही अपनी कोठरी में चली

www.ignited.in

जावे। मेहमान कहीं 8 बजे आएगें इससे पहले ही अपने काम निपटा ले"

शामनाथ अपनी पदोन्नति के लिए अपनी माँ को अकेलेपन का शिकार बना देता है। वह उसके द्वारा किए गए बलिदान को भी नहीं समझता। ऐसा ही होता है। जब बच्चे बड़े हो जाते हैं। तो वह अपने माता पिता के द्वारा किए गए उपकार को भूल जाते हैं। भले ही उस बच्चे की पढ़ाई के लिए माता पिता ने अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया हो। परन्तु उनके बच्चो को वे घर में पड़े किसी कोने में कूड़े कर्कट की भांति दिखाई देते हैं। 'चीफ की दावत' कहानी में ऐसा ही होता है। मिस्टर शामनाथ अपने माँ के बलिदान को फर्ज बताता है।

मिस्टर शामनाथ माँ को लेकर किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं समझता। वह अपनी माँ के हृदय पर कुठराघात करता है। जब वह अपनी माँ को छिपा नहीं पाता तो झूठा प्रर्दशन भी करता है, एक कुर्सी को उठाकर बरामदे में बाहर रखते हुए बोला "आओ माँ, इस पर जरा बैठो तो" 2

परन्तु इस प्रदर्शन में शामनाथ की चिन्ता छिपी हुई है। वह सोच रहा है कि कहीं मां का साक्षातकार चीफ तथा उसके साथ आए लोगों से ना हो जावे। शामनाथ पुरानी पीढ़ी के त्याग के प्रति कृतघ्न है। उसकी माँ ने जेवर बेचकर इस काबिल बनाया कि वह दुनियां में सिर उठाकर जी सके। परन्तु वह उसके उल्लेख मात्र से तिलमिला उठता है। "यह कौनसा राग छेड़ दिया माँ सीधा कह दो नहीं है जेवर बस। इससे पढ़ाई लिखाई का क्या ताल्लुक है, जो जेवर बिका तो कुछ बनकर की आया हूं, नीरा लंड्रा तो नहीं लौट आया जितना दिया था उससे दुगुना ले लेना" (3)

माँ द्वारा किए गए समर्पण को वह चंद रूपयो में तोलता है। आधुनिक युग में युवा वर्ग माता पिता द्वारा किए गए बलिदान को भूल जाते हैं तथा अपनी सफलता को अपनी काबिलियत का नाम देते हैं। यह आधुनिक युग की बहुत बड़ी त्रासदी है कि युवा वर्ग बुजुर्गों के आदर मान-सम्मान को भूल गया है। शामनाथ पूरी तरह से पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंग चुका है। वह अपनी माँ से कभी बात नहीं करता। वह अपनी माँ के साथ हमेशा संवेदनहीन व्यवहार करता है। माँ बेटे के व्यवहार से डरी रहती है। वह बेटे के हुक्म का हमेशा अपनी मर्जी के खिलाफ पालन करती है। शामनाथ की माँ का जी चाह रहा था कि चुपचाप पिछवाड़े विधवा सहेली के घर चली जावे। मगर बेटे के हुक्म को कैसे टाल सकती है। शामनाथ ने माँ को हिदायत दी कि जब चीफ आए तो उनसे बाते कर लेना। परन्तु माँ ने अपनी असमर्थता प्रकट की "मैं न पढ़ी, न लिखी बेटा मैं क्या बात करूंगी। तुम कह देना माँ अनपढ़ है वह जानती समझती नहीं। वह नहीं पूछेगा" (4) परन्तु शामनाथ बिना कुछ सुने चला गया।

शाम को दावत के समय शामनाथ मन ही मन सोचता है कि विदेशी चीफ को कैसे बताएगें की उसकी मां निरक्षर है। आधुनिकता तथा पश्चिमी करण की चकाचैंध में आज के युवा वर्ग बुजुर्गों के दिल पर कुठारा घात करते हैं। बुर्जुग अपनी मर्जी के खिलाफ बच्चों की खुशी के लिए बलिदान कर रहे हैं।

शामनाथ पश्चिमीकरण के रंग में रंगा हुआ है। शाम को महमानों के आने के बाद उनकी खुशामदगी में लग जाता है। शराब का दौर खत्म होने के बाद सभी भोजन के लिए बरामदे में चले जाते हैं। शामनाथ की माँ बरामदे में कुर्सी पर बैठी नींद के खर्राटे ले रही थी कि वह अचानक चीफ के सामने गिर गई। शामनाथ अपने आप को लज्जित महसूस करने लगा कि माँ ये क्या कर रही है। शामनाथ की माँ के गिरने के बाद सभी माँ की दयनीय स्थिति पर हंसने लगें। परन्तु चीफ ने बात को सम्भाल लिया। पश्चिमी सभ्यता के दिखवटीपन में लिपटा शामनाथ अपनी निरक्षर माँ को आदेश देता है

"माँ हाथ मिलाओ" (5)

"कहो माँ, हौ डू यू डू" (6)

माँ धीरे से सकुंचाते हुए बोली "हो डू डू -- " (7)

चीफ शामनाथ की वृद्ध माँ से हाथ मिलाता है। उसे शामनाथ की माँ बहुत अच्छी लगी। शामनाथ ने अपनी माँ का परिचय करवाते हुए बताया कि मेरी माँ गांव से ताल्लुक रखने वाली महिला है। पश्यिमी सभ्यता के रंग में रंगे युवा दिखवटीपन में विश्वास रखते हैं। वे अपने निरक्षर तथा गांव में रहने वाले माता पिता का परिचय करवाने में हिचकिचाते हैं। यही आधुनिक जीवन की त्रासदी व विड़म्बना है। हम अपने नैतिक मूल्य तथा सामाजिक उत्तरदायित्व को भूलते जा रहे हैं। चीफ को गांव के लोग बहुत पसन्द हैं। चीफ ने शामनाथ को बताया। चीफ ने पूछा फिर तो तुम्हारी माँ गीत और नाच भी जानती होगी। यह कहते हुए चीफ ने माँ को प्यार व अपनेपन की भावना से देखा। शामनाथ ने अपनी माँ को चीफ के लिए गाना सुनाने का आदेश दिया परन्तु माँ ने अपनी विवश्ता प्रकट की तो शामनाथ ने कहा- "वा माँ ।मेहमान का कहा कोई भी टालता है? साहब ने इतनी रीझ से कहा है - नहीं गाओगी तो साहब बुरा मानेगें।"8 शामनाथ की माँ ने विवाह का एक गीत सुनाया

www.ignited.in

हरिया नी माये, हरिया नी भैणे

हरिया ते भागी भरिया है।(9)

चीफ ने मॉ के हाथों की बनी फुलकारियां देखी जो उसे बहुत पसन्द आई। शामनाथ ने अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए साहब को नई फुलकारी बनाकर देने का वायदा किया

"यह फटी हुई है साहब, मैं आपको नई बनवा दूंगा। माँ बन देगी। क्यों माँ, साहब को फुलकारी बहुत पसन्द है इन्हे एक ऐसी ही फुलकारी बना दोगी।"(10)

मां ने बेटे के सामने अपनी असमर्थता प्रकट की परन्तु बेटे ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और साहब को कहा कि माँ आपके लिए फुलकारी बना देगी।

"वह जरूर बना देगी। आप उसे देखकर खुश होगें।"10

शामनाथ को माँ की विवश्ता के बावजूद साहब की खुशामदगी आवश्यक थी। क्योंकि वह सोच रहा था कि साहब खुश होगें तो उसे तरक्की मिलेगी।

शामनाथ अवसरवादिता व स्वार्थपूर्ति की साक्षात मूर्ति है। परन्तु विड़म्बना की बात तो यह है कि जिस माँ को वह अपनी तरक्की में बाधक समझता था उसी माँ ने उसे तरक्की दिलवाई। आज के शिक्षित युवा वर्ग भी शामनाथ की भांति स्वार्थी होते जा रहे हैं। उनके नैतिक मूल्य इतने गिर चुके हैं कि उन्हें उपर उठाना मुश्किल हैं वे अपनी पदोन्नति के लिए बुजुर्ग माँ बाप को छोड़कर शहर की चकाचैंध दुनियां में चले जाते हैं। वहां रहकर वे शहरी बाबू बन जाते हैं। वे अपनी पदोन्नति के लिए अपनों का साथ छोड़ देते हैं।

जैसे ही दावत आरम्भ हुई माँ अपनी कोठरी में धीरे से चली गई और अपनी कोठरी में बैठकर जोर जोर से रोने लगी। दावत होते ही सभी मेहमान चले गए। उनके जाने के बाद शामनाथ अपनी माँ के पास गया

"माँ दरवाजा खोलो" (11)

अपने स्वार्थी बेटे की आवाज सुनकर माँ का दिल दहल गया। उसने सोचा कि मुझसे कहीं कोई भूल तो नहीं हो गई। माँ ने धीरे से दरवाजा खोला।

"ओ मम्मी। तुमने तो आज रंग ला दिया ---------- साहब तुमसे इतना खुश हुए कि क्या कहूं। ओ अम्मी ओ अम्मी" (12)

अपने बेटे की तरक्की सुनकर माँ की आंखों मे आंसू छलकने लगे। माँ अपने ही घर में घुटन महसूस करती है तथा अपने बेटे से हरिद्वार जाने का आग्रह करती है।

"बेटा तुम मुझे हरिद्वार भेज दो, मैं कब से कह रही हूं माँ की बात सुनकर शामनाथ तिलमिला उठा वह कहने लगा (14)

"क्या कहा माँ? यह कौन सा राग तुमने छेड़ दिया?''(15)

"तुम मुझे बदनाम करना चाहती हो ताकि दुनिया कहे कि बेटा माँ को अपने पास नहीं रख सकता"(16)

शामनाथ अपनी बदनामी व स्वार्थपूर्ति के लिए माँ को कहता है कि क्या तुम मेरी पदोन्नति नहीं चाहती, क्या तुम अपने हाथों से फुलकारी नहीं बनाओगी। शामनाथ की बात सुनकर बेबस माँ हरिद्वार न जाने का निश्चय करती है। ममता की मूरत तथा वात्सल्यमयी माँ बेटे की तरक्की के बारे में सोचकर अपनी लाचारी भूल गई।

शामनाथ मध्यवर्गीय समाज का एक स्वार्थी तथा लालची इन्सान है। वह अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए अपनी माता के हृदय पर कुठारा घात करता है। वह पश्चिमी सभ्यता के रंग में इतना रंगा हुआ है कि वह अपनी माँ को काम करने के लिए मजूबर करता है।

भीष्म साहनी द्वारा रचित 'चीफ की दावत' कहानी आज भी उतनी ही प्रांसगिक है जितनी उस समय भी। यह कहानी युवा पीढ़ी पर करारा व्यंग्य है। जो अपनी झूठी शान के लिए अपनी माँ के हृदय पर कुठारा घात पहुंचाते हैं जिसको माँ किसी के सामने ब्यान नहीं कर पाती। युवा पीढ़ी अपने माता पिता को अपनी सफलता के मार्ग में बाधा समझती है तथा बुजुर्गों की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से अपेक्षा करते हैं। युवा पीढ़ी बुजुर्गों को बेगाने पन का बोध कराती है।

यह कहानी युवा पीढ़ी के यथार्थ तथा बुजुर्गो के प्रति घटती जिम्मेदारियों का अंकन करती है। समाज में व्याप्त समस्याओं तथा विसंगतियो का चित्रण भीष्म साहनी की इस कहानी में बहुत अच्छे तरीके से हुआ है। आधुनिक मानवीय मूल्यों के विघटन, पारिवारिक मूल्यों के प्रति अनास्था तथा बेगानेपन का चित्रण 'चीफ की दावत' में बहुत अच्छी तरह हुआ है।

www.ignited.in

निष्कर्षः-

भीष्म साहनी ने 'चीफ की दावत' में युवा पीढ़ी के संवेदनशील व्यवहार को चित्रित किया है। वे सामाजिक यथार्थ से जुड़े हुए कथाकार थे। जिन्होने शामनाथ के माध्यम से शिक्षित वर्ग के अशिक्षित आचरण को दर्शाया है तथा स्वार्थी बेटे की स्वार्थी भावनाओं को कहानी के माध्यम से उजागर किया है। उन्होने युवा पीढ़ी को यह अहसास दिलाने की कोशिश की है कि हमे रिश्तों की पवित्रता को नहीं भूलना चाहिए। अपने घर में बुजुर्गों के प्रति लगाव रखना चाहिए। उन्हे बोझ समझकर नहीं बल्कि अपनेपन की भावना से रखना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. भीष्म साहनी कहानियां पृष्ठ 35, आधार प्रकाशन पंचकुला संस्करण 2017
2. उपर्युक्त पृष्ठ 36
3. उपर्युक्त पृष्ठ 36
4. उपर्युक्त पृष्ठ 37(3)(4)
5. उपर्युक्त पृष्ठ 37(5,6,7,8)
6. उपर्युक्त पृष्ठ 39
7. उपर्युक्त पृष्ठ 39
8. उपर्युक्त पृष्ठ 39
9. उपर्युक्त पृष्ठ 39
10. उपर्युक्त पृष्ठ 40
11. उपर्युक्त पृष्ठ 40
12. उपर्युक्त पृष्ठ 40
13. उपर्युक्त पृष्ठ 41
14. उपर्युक्त पृष्ठ 41
15. उपर्युक्त पृष्ठ 41
16. उपर्युक्त पृष्ठ 41

Corresponding Author

Pooja*

M.A. Hindi (UGC NET) Hisar

pp7845594@gmail.com

www.ignited.in